निराला के कथा साहित्य में नारी की समस्या और योगदान

Krishna Kanti Bhagat[1]*, Dr. Mamta Rani[2]

[1] Research Scholar, Kalinga University

[2] Assistant Professor, Kalinga University

सार - मनुष्य स्वभावतः सामाजिक एवं प्रकृति धर्मा प्राणी है।समाज और प्रकृति दोनों का उसके व्यक्तित्व के साथ गहरा संबंध है।है। नारी सृष्टि का आधार है। उसके बिना सृष्टि की कल्पना भी संभव नहीं है।वह बेटी , बहन, पत्नी, मां, प्रेमिका आदि जैसे विभिन्न रूपों में पुरुष का समर्थन करती रही है।मानव सभ्यता की शुरुआत से ही दुनिया मुख्यतः दो प्रकार के उत्पादनों के बल पर आगे बढ़ रही है। पहला सन्तानोत्पादन और दूसरा आर्थिक उत्पादन। आर्थिक उत्पादन का अर्थ है - जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं जैसे खाना, कपड़ा आदि का उत्पादन करना।सामाजिक कुरीतियों की बेड़ियों से मुक्त, शिक्षा के प्रकाश से आलोकित, आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में गतिशील नारी आज दिखाई दे रही है , उसके पीछे समाज सुधारकों, राजनेताओं, महिला आंदोलनकारियों के सवा सौ वर्ष के संघर्ष का रोचक इतिहास है।

कीवर्ड - निराला, साहित्य, नारी, समस्या, योगदान

---------------------------------X------------------------------

परिचय

'नारी' अर्थ के बोधक शब्द भी नारी के स्वरूप पर प्रकाश डालते हैंकवियों की दृष्टि में नारी माया-सी दुर्बोध, प्रकृति-सी बहुरूपी, सहानुभूति-सी सरल रही है। यदि शब्दों के विकास के साथ मानव सभ्यता के विकास का अध्ययन किया जाये तो जान पड़ेगा कि नारी उतने ही अंश में रहस्यमयी है , जितने अंश में संसार की अन्य वस्तु। विषम समाज में विषम स्थिति होने के कारण नारी के विभिन्न स्वरूप होते गये। मानव का नारी के साथ शारीरिक , रागात्मक और धार्मिक सम्बन्ध होने के कारण नारी के स्वरूप भेद हुए। एक भी शब्द स्त्री के स्वभाव को बयां नहीं कर सकता। लेकिन फिर भी जिस प्रकार एक छोटे से ओस बिंदु में पूरा सौरमंडलप्रतिबिम्बित होता है, उसी प्रकार स्त्री के सबसे छोटे शब्द में भी उसकी जाति , उसके गुण, उसकी क्रिया या इच्छा परिलक्षित होती है। साथ ही नाम धारण करने वाले समाज की मानसिक स्थिति, बौद्धिक प्रगति और सांस्कृतिक चेतना को भी व्यक्त किया जाता है।

नारी' शब्द की व्युत्पत्ति:

''नारी' शब्द 'नृ' अथवा 'नर' से बना है नृ $डीष = नारी - नरस्य समान धर्मा नारी नृ $ अ $ डीन = नारी।'' 'नारी' शब्द नर से उत्पन्न माना जाता है। ''यास्क ने 'नर' शब्द को नृत (नाचना) से बनाया है -'नराःनृत्यन्तिकर्मसु'अर्थात् काम की पूर्ति के लिएमनुष्य हाथ-पैर नचाता है। स्त्री शब्द का प्रयोग स्त्री के लिए भी किया जाता है।

नारी के पर्यायवाची शब्द:

नारी को 'महिला' - मह् $ इलय्$ आ = महिला। मह् का अर्थ पूजा है। पूज्य होने के कारण स्त्री का पर्याय महिला पड़ा।'' इसके अतिरिक्त क्रोध करने वाली नारी को 'कोपना', जिसमें क्रोध (भाम) अधिक रहता हो वह 'भामिनी' जो क्रोध और आवेश में भयंकर रूप धारण करे , वह 'चण्डी', जो नशे के कारण उन्मत्त-सी दिखाई देवे , वह मतकाशिनी, जिसका राजा के साथ अभिषेक हुआ, वह कृताभिषेका, जो माता के रूप में पूजनीय हो , वह 'महिषी', जो केवल भोग के लिए हो 'भोगिनी' और जो पुरुष के सभीधर्मों में साथ दे , वह सहधर्मिणी कहलाती है।' ''अमरकोष' में नारी के निम्नलिखित पर्याय माने हैं - 'स्त्री , योषित्, अबला, योषा, जोषा,

www.ignited.in

सीमन्तिनी, वधु, प्रतीपदर्शिनी, वामा, वनिता,महिला, अंगना, भीरू, कामिनी, वामलोचना, प्रभदा, मानिनी, कान्ता, ललना, नितम्बिनी, सुन्दरी, रमणी, रामा, कोपना, भामिनी, चण्डी, वरारोहा, मतकाशिनी, करवर्णिनी, कृताभिषेका, महिषी, भेगिनी, पत्नी, सहधर्मिणी, भार्या, कुटुम्बिनी, पुरन्ध्री, अध्यूढ़ा, अधिभिन्ना, स्वयंवरा, पतिवरा, कुलपालिका।"

नारी चेतना से आशय:

नारी चेतना से तात्पर्य नारी की जागरूकता सेहै। आज की नारी कमजोर, भयभीत, घर की चारदीवारी में कैद और पुरुष के जूते-चप्पल समझी जाने वाली नहीं है। देश के संविधान द्वारा दी गई स्वतंत्रता , शिक्षा और अधिकारों ने महिलाओं को जगाया है। आज वह स्वावलंबी बनकर जीवन के हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का इजहार कर रही हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा के प्रचार-प्रसार , स्त्री-पुरुष के बीच समानता को रेखांकित करने वाले संवैधानिक उपायों तथा संचार माध्यमों के बढ़ते प्रभाव से समाज में जिस गति सजागरूकता आई है, उसी गति से स्त्रियों में अधिकार बोध भी विकसित हुआ है। इसी कारण आज की नारी और स्वतंत्रता से पूर्व की नारी के बीच के अन्तर को आसानी से देखा और अनुभव किया जा सकता है। आज की नारी पुरानी परम्पराओं की लीक पर चलने की बजाए खुले आम चुनौती भरे रास्तों पर चलने का खतरा उठाने के लिए तैयार दिखाई देती है। वह अपने अच्छे होने के लिए औरों की ओर न देखकर खुद के भीतर झांकती है।

आज उसे पता चल गया है कि उसका मसीहा , वह खुद है। नये नैतिकता बोधने प्रेम और विवाह की परम्परागत अवधारणा को बदल दिया।अब वह आदमी की दासी नहीं है , बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगी है। आधुनिक सभ्यता ने उनकी स्वतंत्रता को स्वीकार किया है, कानून ने उन्हें समानता का अधिकार दिया है। शिक्षा ने उनके सोये हुए स्वाभिमान को जगाया है, जिससे वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो गई हैं। शिक्षा ने सामाजिक, राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों में अपना प्रभाव बढ़ाया है। वह अब इन क्षेत्रों में सक्रिय भाग ले रही है।

महिला संगठनों का नारी-चेतना में योगदान:

स्त्री शिक्षा , स्त्री मताधिकार , सामाजिक-कुरीतियों की समाप्तिके लिए इस संस्था ने बढ़-चढ़कर कार्य किया। परिवार नियोजन कार्यक्रम व हिन्दू कोड बिल जैसे मुद्दों का समर्थन कर इस संस्था ने आधुनिक दृष्टिकोण को भी व्यक्त किया। सन् 1927 में ऐनीबेसन्ट व मारग्रेट ने 'अखिल भारतीय महिला परिषद्' नाम की एक संस्था खोली। यह संस्था केवल जल से - प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं थी , बल्कि इसने योजनाबद्ध तरीके से कार्य किए तथा स्त्रियों की समस्याओं पर विचार-विमर्श कर सुझाव आदि लेकर सरकारी अधिकारियों तक उन समस्याओं को पहुँचाया तथा सरकार द्वारा गठित समितियों में अपनी भागीदारी को भी सुनिश्चित करवाया।

इन संगठनों ने महिलाओं के सामाजिक , राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्र पर विशेष बल दिया और महिला चेतना की दिशा में सराहनीय कार्य किया। "राजनीतिक क्षेत्र में महिला संगठनों की गतिविधियों , मताधिकार तथा चुनाव लड़ने के अधिकार को केन्द्र में रखकर चली है। किन्तु इन दोनों अधिकारों के माध्यम से उनका अभिप्राय राजनीतिक शक्ति पाना नहीं था , बल्कि विधान सभाओं में जाकर स्त्रियों के कल्याण हेतु स्त्री शिक्षा व समाज सुधार के कार्यक्रमों को अधिक तेजी से लागू करना था।"

नारीचेतना के विविध आयाम:

इक्कीसवीं शताब्दी में भारतीय नारी अपनी वर्जनाओं को तोड़, लक्ष्मण रेखाओं को छोड़ अबलापन की भावना को तिलांजलि देकर विकास के सोपान चढ़ रही है। शिक्षा के प्रसार के साथ इसकी मूल मानसिकता में तेजी से बदलाव आया है। आज उसने प्राचीन दासता की बेड़ियों को तोड़कर नए युग में प्रवेश किया है। उसने अपनी प्रतिभा एवं आत्म-विश्वास के बल नई ऊँचाइयों को छू लिया है। जीवन के हर क्षेत्र में चाहे वह सामाजिक हो , राजनीतिक हो या आर्थिक हो या कोई अन्य क्षेत्र हो , उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर निरंतर प्रगति की है और अपने व्यक्तित्व की पहचान बनाने में सफल साबित हुए हैं।

- सामाजिक चेतना एवं नारी:
- राजनीतिक चेतना एवं नारी:
- आर्थिक चेतना एवं नारी:
- सांस्कृतिक चेतना एवं नारी:

सामाजिक समस्यायें

निराला जाग्रत सामाजिक चेतना के लेखक हैं। निराला के कुल पांच कहानी संग्रह कथा साहित्य में प्रकाशित हुए हैं , जिन्हें प्रकाशन वर्ष के क्रम में नामांकित किया गया है:-

1. लिली1934
2. सखी 1935
3. सुकुल की बीवी 1941
4. चतुरी चमार 1945
5. देवी 1948

चतुरी चमार और देवी एक स्वतंत्र कहानी संग्रह नहीं है। चतुरी चमार में सखी कहानी संग्रह की सभी कहानियों का संकलन किया गया है। देवी में चुनी हुई कहानियों का संकलन किया गया है, जिसमें वही कहानी'जान की' को नए सिरे से जोड़ा गया है। राजकमल प्रकाशन ने उनकी सभी 25 कहानियों का संग्रह निराला की 'संपूर्ण कहानियां' शीर्षक से प्रकाशित किया। इस संग्रह के प्रकाशकीय वक्तव्य में लिखा है कि 'सम्पूर्ण कहानियाँ' प्रखर जनवादी चेतना के लेखक निराला की 25कहानियों का महत्वपूर्ण संग्रह है । इन कहानियों को रचना क्रम से यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।"

निराला की कहानियोंमे स्त्री.

निराला ने अपने साहित्य में नारी को प्रमुख स्थान दिया है , निराला ने नारी को शक्ति का अवतार माना है। उन्होंने नारी में महाशक्ति के दर्शन भी किए हैं । चाहे 'तोड़ती पत्थर' की पत्थर तक को ताड़े देने वाली नायिका हो या अप्सरा उपन्यास की नायिका कनक के व्यक्तित्व का जिक्र हो बिना किसी इंगित के ही जनता की क्षुब्ध तरगं शांति हो गई । सबके अंग रूप की तड़ित से प्रहत निश्चेष्ट रह गए । सर्वेश्वरी का हाथ पकड़े हुए कनक मोटर से उतर रही थी । सबकीआखो के संध्याकाश जैसे सुन्दर इन्द्रधनुष अंकित हो गया है । सबने देखा मूर्तिमती प्रभात की किरण है ।" ये जो प्रभात कनक में लोगों ने देखा वह नारी की नवीन जीवनशक्ति की जिजीविषा है , जिसे निराला जी नारियो में देखने के आकांक्षी हैं ।

नारी के महत्व को बताते हुए निराला अपनी कहानी देवी में लिखते हैं- "पगली का ध्यान मेरा ज्ञान बन गया , उसे देखकर मुझे बार-बार महाशक्ति की याद आने लगी। विष्णुकान्त शास्त्री जी ने सुश्री उषा द्विवेदी की कृति निराला का कथा साहित्य: वस्तु एवं शिल्प में लेखक द्वारा किए गए शोध के निष्कर्ष को स्वीकार करते हुए निराला की कथा-साहित्य में नारी उत्पीड़न के सटीक चित्रण को स्वीकार करते हुए लिखा है कि उनकी कथा के केंद्र में समाज का उत्पीड़ित वर्ग , महिलाओं की दयनीय स्थिति है। दशा (विधवा, परित्यक्त, वेश्या) आर्थिक शोषण , जाति असमानता, रूढ़ियाँ, अंधविश्वास और मान्यताएँ समाज की जड़ हैं। जागरुक कथाकार निराला ने इन बुराइयों के प्रति अपनी विशिष्ट शैली में रोष प्रकट किया है और व्यंग्य के रूप में प्रहार भी किया है।

'पद्म और लिली ' कहानी की नायिका पद्मा के चरित्र के माध्यम से, निराला ने एक शिक्षित, स्वतंत्र और प्रगतिशील वर्ग की एक महिला को वास्तविक रूप से चित्रित किया है , जो एक ओर अपने रूढ़िवादी दिवंगत पिता मौर्य की अंतिम इच्छा का सम्मान करती है। जीवन के लिए सख्त प्रतिज्ञा। अगर वह इसे लेती है, तो दूसरी आरी भी उसके प्यार की गरिमा को बनाए रखती है। हिन्दी कथा-साहित्य में निराला ने छायावादी नायिकाओं की उपस्थिति दर्ज कराई । निराला ने अपनी कविता की तरह अपनी कहानियों में भी नायिका की सुंदरता को चित्रित किया है। नायिका की सुंदरता का वर्णन करते हुए, निराला अपनी एक कहानी में लिखती हैं - "कमला सोलहवें वर्ष की आधी खुली कली है।

हृदय का रस अमृत-स्नेह से भरा हुआ , खुली नावों सी आखो चपल लहरों पर अदृश्य प्रिय की ओर परा और अपरा की तरह बही जा रही है ।" इन सभी चित्रां में निराला की छायावादी कविताओं की स्पष्ट छाप दिखाई देती है । निराला की कहानियों में प्रकृति चित्रण एवं नायिकाओं के रूप चित्रण में जो काव्यात्मक भाषा मिलती है, वह पूरी कहानी पर प्रक्षेपित नहीं है । निराला की कविताओं में जो दृष्टिकोण भाषा , छन्द, विषय को लेकर है वही उनकी कहानियों में भी मिलता है । कहानियों में भी उनका प्रकृति चित्रण अत्यंत जीवतं है , उनके प्रकृति चित्रण को पढ़कर पाठको के समक्ष एक चित्र सा प्रस्तुत हो जाता है । यथा - "जेठ का महीना ,सूरज डूब रहा है । जोरो से बहती हुई मलय वायु में षाडेशी का स्पर्श मिलता है । यह अकेली दक्षिणी हवा बंगाल की आंधी कविता है ।" प्रकृति के भीषण रूप का भी चित्रण निराला जी करते है । बाढ़ की विभीषिका का वर्णन करते हुए लिखते हैं - "कृष्णा की बाढ़ बह चुकी है , सुतीक्ष्ण, रक्तलिप्त अदृश्य दाँतों का लाल जिह्वयोजनाओ तक , क्रूर, भीषण मुख फैलाकर प्राण सुरा पीती हुई मृत्यु तांडव कर रही है ।

सहस्तरोगृहशून्य, क्षुधा-क्लिष्ट, निःस्व, जीवित कंकाल साक्षात प्रेतों से इधर-उधर घूम रहे हैं । आर्तनाद, चित्कार,

www.ignited.in

करूणानुरोधो में सेनापति अकाल की पुनः पुनः शंख-ध्वनि हो रही है ।”

उपसंहार

निराला समाज में पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता के विरोधी थे। स्वतंत्रता संग्राम में एक ओर जहां ऊंच-नीच की असमानता को मिटाने का प्रयास किया जा रहा था, वहीं दूसरी ओर स्त्री-पुरूष की समानता के लिए संघर्ष भी शुरू हो गया था। निराला खुद लिखते हैं - "जिस तरह हम खुद गुलाम हैं, उसी तरह हमने अपनी महिलाओं को गुलाम बनाकर रखा है। बल्कि उन्हें गुलामों की तरह रखा गया है। उन्हें जल्द ही इस महादैत्य से मुक्त किया जाना चाहिए। तभी हम गुलामी की बेड़ियों से मुक्त हो सकते हैं।" हमारी गुलामी काट दी जाए।" 30 निराला जी का मन विधवाओं की समाज में दयनीय दशा देखकर व्याकुल हो जाता है। निराला ने महिलाओं के दुखद और दर्दनाक जीवन के बारे में कई कहानियां लिखी हैं। समाज में प्रचलित कई रीति-रिवाजों और लोकाचारों ने विधवा की जीवन स्थितियों को और भी दर्दनाक बना दिया था। केरल के कालीकट विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. आरसू ने विधवाओं के प्रति निराला की संवेदनशीलता को उजागर करते हुए लिखा है - "निराला ने उन्हें एक दयालु हृदय से चित्रित किया है। समाज की क्रूर नीति के खिलाफ क्रोध विद्रोह का लक्ष्य है , लेकिन देना अनिवार्य है। विधवा को आश्रय , आश्वासन और विश्वास उसकी अंतरात्मा की पहचान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. डाॅ. लक्ष्मी शुक्ला, भारतीय मनोविज्ञान, पृष्ठ-107
2. डाॅ. नगेन्द्र, आस्था के चरण, पृष्ठ-183
3. डाॅ. देवराज पथिक , नई कविता में राष्ट्रीय-चेतना , पृष्ठ-17
4. कुंवरपाल सिंह, “साहित्य समीक्षा और माक्र्सवाद” में डाॅ. रामविलास का लेख , यथार्थ जगत और साहित्य , पृष्ठ-69
5. कमलेश्वर, नई कहानी की भूमिका, पृष्ठ-177
6. डाॅ. बैजनाथ प्रसाद शुक्ल , भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युग-चेतना, पृष्ठ-7
7. गजानन माधव मुक्तिबोध, मुक्तिबोध रचनावली, पृष्ठ-215
8. सं. साहनजारोव व अन्य, समाज विज्ञान, पृष्ठ-47
9. डी.डी. रघुसेन, डिक्शनरीआॅफफिलोसफी, पृष्ठ-98
10. श्रीमद् भगवत गीता: अध्याय 10/22
11. श्रीमद् भगवत गीता तत्त्व विवेची टीका सहित , पृष्ठ-425
12. देवेन्द्र, साहित्य और आधुनिक युग बोध, पृष्ठ-18
13. डाॅ. रत्नाकारपाण्डेय , हिन्दी साहित्य: सामाजिक चेतना, पृष्ठ-158
14. डाॅ. धीरेन्द्र वर्मा , हिन्दी साहित्य कोश , भाग-1, पृष्ठ-247

Corresponding Author

Krishna Kanti Bhagat*

Research Scholar, Kalinga University